संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार
सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान)

सीसीआरटी समाचार

CCRT Newsletter

खण्ड 2 • अंक 6 • जून 2024

Volume 2 • Issue 6 • June, 2024

कला मंथन

प्रतीकवादी दर्शन एक ओर बुद्धि के महत्व को अस्वीकार करता है, जो अभिजातवादी दृष्टिकोण के विरूद्ध है, तो दूसरी ओर वह रोमांचवादी भावना-प्रधान बातों को भी अस्वीकार करता है। प्रतीकवादी जीवन दर्शन समान, दृश्यमान जगत, परोक्ष जगत की अ-संपूर्ण प्रतिच्छाया है। परोक्ष जगत तक पहुँचना असंभव है। काव्य तथा साहित्य का मूल लक्ष्य वस्तु-जगत के दृश्यगत तथा स्पर्शगत ज्ञान से परे जाकर अतिवास्तव, चिरतत्व एवं शाश्वत का दर्शन करवाना है। किन्तु उसके परे कुछ देखने की उनकी मंशा है। उनके बाद जो कवि हुए, उन्होंने अंतर्गत जगत को केंद्रस्थान बनाया। उनके अनुसार यह अंतर्जगत का शाश्वत बोध होता है। इस जीवन-दर्शन के अनुसार आत्मा, प्रेम, सौंदर्य, ये सारे भ्रम हैं और उनकी उपयोगिता यही है, ताकि हम उनके परे जाकर शाश्वत जीवन सत्य का दर्शन कर सकें।

परंतु यह भी स्पष्ट है कि इस शाश्वत जीवन तत्व को हम बुद्धि, भावना एवं इंद्रियों के माध्यम से खोज नहीं सकते। केवल संवेदनाएँ 'सत्य' हैं। बाकी सारी बातें केवल 'भ्रम' हैं। वे बातें भ्रांतिपूर्ण तथा अवास्तव हैं। हमारी इंद्रियों पर जो आघात होते हैं वे सत्य हैं। वही वास्तव तथ्य है। वे आधारहीन तथा भ्रामक हैं। फलस्वरूप संवेदनाएँ सब कुछ हैं। बुद्धि एवं भावनाओं के संयम के द्वारा जब हम अपने व्यक्तित्व को व्यवस्थित रूप से संयोजित करते हैं, तब हम अनंत से स्पर्शित होते हैं। ये क्षण प्राप्त होना कठिन है, और इसीलिए मानव के लिए वे अमूल्य हैं। कलाकार इस क्षण की खोज करता है। कवि के पास भी कुछ बातें ऐसी होती हैं जिनके कारण वह संगीत से अधिक अभिव्यक्तिपूर्ण बनता है। गंध, रूप, रंग, स्वाद, भाव-उद्रेक ये संवेदनाएँ हमें परोक्ष जगत में ले जाती हैं। इन संवेदनाओं के 'शब्द' प्रतीक हैं। संवेदना स्वयं शाश्वत एवं अनंत जीवन की प्रतीक है। अर्थात् शब्द प्रतीकों के प्रतीक हैं, इसीलिए द्विधापूर्ण, अस्पष्ट एवं रहस्यमय हैं। इस प्रकार शब्दों के रंग, रूप, गंध, स्वाद, नाद संबंधी उपकरणों से कवि अतींद्रिय परोक्ष जगत में प्रवेश करने के लिए अलौकिक शक्ति प्राप्त करता है।

डॉ. विनोद नारायण इन्दूरकर
अध्यक्ष, सीसीआरटी

प्रमुख गतिविधियों की झलकियाँ

जून 2024 की प्रमुख गतिविधियाँ

10वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह

20 जून से 10 जुलाई 2024 तक सीसीआरटी मुख्यालय में एनईपी-2020 के अनुरूप 486वें अनुस्थापन पाठ्यक्रम के अंतर्गत देश के 06 विभिन्न राज्यों से आए 24 प्रतिभागियों व सीसीआरटी परिवार के समस्त सदस्यों ने 21 जून 2024 को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस बड़े हर्षोल्लास से मनाया। इसमें श्रीमती वर्षा लाभाषेतवर ने योग के माध्यम से स्वयं को कैसे जानें तथा जीवन को कैसे अनुशासित एवं स्वस्थ रूप में जीएं, इसके बारे में सूक्ष्म योगाभ्यास व प्राणायाम से इसकी जानकारी दी। इसी शृंखला में डॉ. रुचि दहिया के साथ माइंडफुलनेस और ध्यान, प्रोफेसर पी.सी. जोशी द्वारा शिक्षा में पारंपरिक स्वास्थ्य प्रणालियों का महत्व भी शामिल थे। अंततः सभी प्रतिभागी ने योग के महत्त्व को समझते हुए इसे जीवन में कैसे आत्मसात करें तथा विकसित भारत की संकल्पना को यथार्थ रूप दें, इसका प्रत्यक्ष अनुभव करते हुए इस दिवस को वास्तविक रूप में सफल बनाया।

प्रशिक्षण / TRAINING

• एनईपी-2020 के अनुरूप 486वां अनुस्थापन पाठ्यक्रम

(20 जून - 10 जुलाई, 2024, सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली)

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 06 विभिन्न राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के 24 शिक्षक प्रतिभागी (07 शिक्षिकाओं सहित) शामिल हुए। इस अनूठे प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली में किया गया। इस कार्यक्रम में सांस्कृतिक इतिहास, संचार कौशल, पारंपरिक कलाओं एवं एनईपी-2020 की सिफारिशों के व्यावहारिक अनुप्रयोग पर विशेषज्ञ चर्चाएं शामिल थीं। प्रतिभागियों ने भारतीय भाषाओं में गीत सीखने, पारंपरिक कठपुतलियों का निर्माण, मूर्त एवं अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर का अन्वेषण करने जैसी विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया। कार्यक्रम में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की शैक्षिक यात्रा भी शामिल थी, जो धरोहर संरक्षण, नागरिक मूल्यों और अंतर्विषयक दृष्टिकोणों पर महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। विशेष रूप से संचार कौशल को बढ़ाने, लैंगिक समानता को बढ़ावा देने एवं डिजिटल पेडागॉजी को एकीकृत करने पर केंद्रित सत्रों ने आधुनिक शिक्षा में पारंपरिक कलाओं की समकालीन प्रासंगिकता को उजागर किया।

इस कार्यक्रम ने शिक्षकों को उनके शिक्षण दृष्टिकोण में विविधता लाने और समग्र शिक्षा के लिए पारंपरिक और आधुनिक पद्धतियों को एकीकृत करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान किया। प्रतिभागियों ने समूह चर्चा में कार्यशालाओं और प्रस्तुतियों के माध्यम से अपने विचारों और अनुभवों को साझा किया, जिससे एक सहयोगात्मक और ज्ञानवर्धक वातावरण बना।

• 'एनईपी-2020 के अनुरूप शिक्षा में पुतलीकला की भूमिका' पर कार्यशाला

(19 जून से 03 जुलाई, 2024, सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद)

इस कार्यशाला में 08 विभिन्न राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के 45 शिक्षक प्रतिभागी (19 शिक्षिकाओं सहित) शामिल हुए। कार्यशाला पुतलीकला की शिक्षा में शक्तिशाली भूमिका की विविधता पर केंद्रित थी। प्रतिभागियों ने पुतलीकला के माध्यम से कक्षा में नवाचारी तरीके से पढ़ाने के तरीके सीखे, जो एनईपी-2020 की सिफारिशों के अनुरूप थे।

कार्यशाला के दौरान अनुभवी कठपुतली कलाकारों एवं शिक्षाविदों ने प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया, ताकि वे कठपुतली की अभिव्यक्तिपूर्ण संभावनाओं का उपयोग करके कक्षा में जुड़ाव बढ़ाने और समग्र सीखने के अनुभव को प्रोत्साहित कर सकें। सत्रों में कठपुतली की कला को सीखने और स्वयं के शिक्षण उपकरणों के निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लिया गया, जिससे शिक्षकों को अपनी कक्षाओं में कठपुतली के जादू को शामिल करने का अनुभव मिला।

इस कार्यक्रम ने शिक्षकों को उनके शिक्षण दृष्टिकोण में विविधता लाने और समग्र शिक्षा के लिए पारंपरिक और आधुनिक पद्धतियों को एकीकृत करने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान किया। प्रतिभागियों ने समूह चर्चा में, कार्यशालाओं और प्रस्तुतियों के माध्यम से अपने विचारों और अनुभवों को साझा किया, जिससे एक सहयोगात्मक और ज्ञानवर्धक वातावरण बना।

प्रतिभागियों ने कठपुतली के विभिन्न रूपों की तकनीकों और उनकी सांस्कृतिक महत्ता पर गहन चर्चा की। सत्रों के दौरान उन्होंने सीखा कि कैसे कठपुतली का उपयोग बच्चों में रचनात्मकता, संचार कौशल एवं टीम वर्क को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है। कार्यशाला के अंत में शिक्षकों ने अपनी कठपुतली प्रस्तुतियों और शिक्षण विधियों को साझा किया, जिससे उन्होंने कार्यशाला में सीखे गए ज्ञान और कौशल को व्यावहारिक रूप से प्रदर्शित किया।

• 'एनईपी-2020 के अनुरूप शिक्षा में पुतलीकला की भूमिका' पर कार्यशाला

(20 जून से 04 जुलाई, 2024, सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी)

इस कार्यशाला में 10 विभिन्न राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के 66 शिक्षक प्रतिभागी (25 शिक्षिकाओं सहित) शामिल हुए। कार्यशाला ने कठपुतली की शिक्षा में प्रभावी भूमिका की विविधता का गहराई से अन्वेषण किया और शिक्षकों को इस नवाचारी दृष्टिकोण को अपनी शिक्षण पद्धतियों में एकीकृत करने के व्यावहारिक अनुप्रयोगों की जानकारी दी।

16 दिनों की इस कार्यशाला में क्षेत्रीय योगदान, लिंग और मूल्य शिक्षा का महत्व और भारत में कठपुतली थिएटर परंपराओं का इतिहास और उत्पत्ति पर विचारोत्तेजक सत्र शामिल थे। प्रतिभागियों ने कठपुतली के विभिन्न प्रकारों की तैयारी और सामंजस्य का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किया, जिससे वे अपनी कक्षाओं में कठपुतली को एकीकृत करने में सक्षम हो सके। कार्यशाला के समापन में प्रतिभागियों ने अपने कठपुतली प्रस्तुतियों एवं पाठ योजनाओं को प्रदर्शित किया।

कठपुतली की कला को सीखने और उसे शिक्षा में एकीकृत करने की प्रक्रिया ने शिक्षकों को नई शिक्षण विधियों को अपनाने और उन्हें अपने छात्रों के साथ साझा करने के लिए प्रेरित किया। कार्यशाला के दौरान उन्होंने कठपुतली के माध्यम से जटिल शैक्षिक अवधारणाओं को सरल और रोचक बनाने के तरीकों की खोज की। प्रतिभागियों ने भी अपने अनुभव और सीख को साझा किया, जिससे समूह में समृद्ध और विविध दृष्टिकोण उत्पन्न हुए।

• 'विद्यालयी शिक्षा में हस्तकला कौशल का समावेश' पर कार्यशाला

(25 जून से 04 जुलाई, 2024, सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर)

इस कार्यशाला में 08 विभिन्न राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के 62 शिक्षक (23 शिक्षिकाओं सहित) शामिल हुए। कार्यशाला विद्यालयों में सांस्कृतिक शिक्षा की भूमिका को बढ़ाने के लिए पारंपरिक हस्तकला कौशल को समावेश करने के लक्ष्य पर केंद्रित थी। इसके सत्रों में भारतीय हस्तशिल्प पर सामाजिक परिवर्तनों का प्रभाव और भारतीय समाज में कारीगरों की भूमिका पर चर्चा शामिल थी।

प्रतिभागियों ने विभिन्न पारंपरिक हस्तकला, जैसे मिट्टी और कुम्हार कला, टाई और डाई, प्राकृतिक कचरे से खिलौने, पुस्तक बाइंडिंग, मैक्रेमे, और कागज की थैलियों की व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त की। कार्यक्रम का समापन सिद्धि समारोह के साथ हुआ, जिसमें प्रतिभागियों ने अपने तैयार किए गए हस्तकला उत्पादों, परियोजना कार्य एवं पाठ योजनाओं को प्रदर्शित किया।

इस कार्यशाला से शिक्षकों को अपने शिक्षण में हस्तकला कौशल को प्रभावी रूप से समावेश करने के लिए नए दृष्टिकोण एवं तकनीकों को सीखने का अवसर मिला। प्रतिभागियों ने हाथों से विभिन्न हस्तकला बनाने की प्रक्रिया में भाग लिया, जिससे उन्हें शिक्षा में रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देने के तरीके मिले। इस अनुभव ने उन्हें अपने छात्रों के लिए ओर अधिक आकर्षक और परस्पर क्रियात्मक शिक्षण वातावरण बनाने में मदद की।

• 'शिक्षा में नाट्यकला' पर कार्यशाला

(25–29 जून, 2024, एससीजेडसीसी, नागपुर, महाराष्ट्र)

इस कार्यशाला में महाराष्ट्र राज्य के 87 शिक्षक (30 शिक्षिकाओं सहित) शामिल हुए। सीसीआरटी और एससीजेडसीसी, नागपुर के सहयोग से आयोजित इस कार्यशाला ने शिक्षा में रंगमंच के महत्व को उजागर किया। विशेषज्ञ सत्रों में रंगमंच और नाटक के माध्यम से संचार कौशल को बढ़ाने पर जोर दिया गया और शिक्षकों को रंगमंच कला को अपने शिक्षण में शामिल करने के व्यावहारिक तरीके सिखाए गए।

इस कार्यशाला का उद्देश्य भारत के समृद्ध सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं के माध्यम से शिक्षा को समृद्ध बनाना था, जिसमें रंगमंच की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया गया।

इस कार्यशाला में प्रतिभागियों ने रंगमंच के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया, जिसमें अभिनय, निर्देशन, और नाटक लेखन शामिल थे। उन्होंने रंगमंच के माध्यम से शिक्षण के नए दृष्टिकोणों को खोजा और बच्चों में आत्मविश्वास, रचनात्मकता, और संचार कौशल को बढ़ावा देने के तरीकों की पहचान की। इस प्रक्रिया ने शिक्षकों को एक समग्र शिक्षण पद्धति अपनाने में मदद की, जो छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देती है। कार्यक्रम का समापन, सीधी समारोह के साथ हुआ, जिसमें सीसीआरटी के माननीय अध्यक्ष डॉ. विनोद नारायण इन्दूरकर एवं डॉ. राहुल कुमार, उपनिदेशक, सीसीआरटी ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति देकर प्रतिभागियों को प्रेरित किया।

छात्रवृत्ति और अध्येतावृत्ति / SCHOLARSHIP AND FELLOWSHIP

सिद्धि समारोहः "राष्ट्रीय सांस्कृतिक शिविर सह महोत्सव"

छात्रवृत्ति अनुभाग ने 27 मई, 2024 से 02 जून, 2024 तक सीसीआरटी परिसर, नई दिल्ली में मीराबाई की संगीत रचनाओं पर आधारित सामूहिक नृत्य-संगीत प्रस्तुति और भारतीय कार्टूनिस्ट और चित्रकार आर के लक्ष्मण को समर्पित दृश्य कला पर कार्यशाला-सह-प्रदर्शनी नामक राष्ट्रीय सांस्कृतिक शिविर सह महोत्सव का आयोजन किया।

इस महोत्सव में दिल्ली, चंडीगढ़, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और उत्तराखंड जैसे 07 विभिन्न राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों से 55 छात्रवृत्ति धारकों/युवा कलाकारों/अध्येताओं ने भाग लिया।

02 जून 2024 को सिद्धि समारोह के दौरान नृत्य-संगीत समूह की एकीकृत प्रस्तुति दी गई। इसके अलावा 02 जून 2024 को एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक शिविर सह महोत्सव के तहत फोटोग्राफी कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों द्वारा ली गई तस्वीरें

आर.के. लक्ष्मण कार्टून गैलरी में आयोजित प्रदर्शनी की झलकियाँ:

विस्तार सेवाएँ तथा समुदाय पुनर्निवेश कार्यक्रम/EXTENSION SERVICES AND COMMUNITY FEEDBACK PROGRAMME (ESCFP)

सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली

क्रम सं.	स्थान	अवधि
1.	डीसीपीओ/डीसीपीयू-IV(पश्चिम) हरि नगर, निर्मल छाया कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली	26-28 जून 2024
2.	स्टैंड एन स्ट्राइड फाउंडेशन/स्कूल द्वारका सेक्टर-2, पालम विहार, नई दिल्ली	27-29 जून 2024

क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी

क्रम सं.	स्थान	अवधि
1.	बेतकुची हाई स्कूल, गुवाहाटी, असम	24-26 जून 2024
2.	जापोरीगोग हाई स्कूल, गुवाहाटी, असम	24-26 जून 2024
3.	नरकासुर हायर सेकेंडरी स्कूल, गुवाहाटी, असम	24-26 जून 2024

जून 2024 के महीने में सीसीआरटी मुख्यालय और इसके क्षेत्रीय केंद्र में कुल 1187 बच्चों को विस्तार सेवाएँ तथा समुदाय पुनर्निवेश कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित किया गया।

ग्रीष्म कालीन शिविर 'इंद्रधनुष 2024'

सीसीआरटी मुख्यालय नई दिल्ली और क्षेत्रीय केंद्र दमोह में क्रमशः 07-16 आयु वर्ग के बच्चों के लिए ग्रीष्म कालीन शिविर 'इंद्रधनुष -2024' का आयोजन किया गया, जिसमें 275 बच्चों नें भाग लिया।

क्रम सं.	स्थान	अवधि	प्रतिभागी बच्चे
1.	सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली	27 मई से 06 जून 2024	225
2.	सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, दमोह	28 मई से 07 जून 2024	50

स्वच्छता कार्य योजना/WORKSHOP ON SWACHH BHARAT MISSION:

क्रम सं.	स्थान	अवधि
1.	सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर	20-26 जून 2024
2.	सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद	24-25 जून 2024

जून 2024 माह में प्रशिक्षण अनुभाग द्वारा स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत आयोजित गतिविधियाँ

स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में निम्नलिखित सत्र आयोजित किए गए:

क्रम सं.	स्थान	प्रशिक्षण कार्यक्रम का नाम	विषय	दिनांक
1.	सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद	19 जून से 03 जुलाई, 2024 तक "एनईपी 2020 के अनुरूप शिक्षा में कठपुतली की भूमिका" पर कार्यशाला	संधारणीय जीवन: स्वच्छ भारत मिशन के तहत अपशिष्ट प्रबंधन में अच्छे प्रचलन	24 जून 2024
2.	सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी	20 जून से 04 जुलाई, 2024 तक "एनईपी 2020 के अनुरूप शिक्षा में कठपुतली की भूमिका" पर कार्यशाला	स्वच्छता अभियान के माध्यम से शिक्षा - पारंपरिक खिलौनों और खेलों का उपयोग करके स्वच्छता हमारी जिम्मेदारी है	25 जून 2024
3.	सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर	25 जून से 04 जुलाई, 2024 तक "स्कूली शिक्षा में शिल्प कौशल को एकीकृत करना" पर कार्यशाला	स्वच्छ भारत - प्रतिभागियों के बीच चर्चा: संधारणीय पर्यावरणीय प्रचलनों के लिए पारंपरिक रूप से शिल्प का उपयोग करना	28 जून 2024

हिन्दी अनुभाग / HINDI SECTION

दिनांक 24 जून 2024 को सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली के भरतमुनि नाट्यगृह और एपीजे अब्दुल कलाम सम्मेलन कक्ष में अप्रैल-जून 2024 तिमाही की हिंदी कार्यशाला दो सत्रों में आयोजित की गई । इस कार्यशाला के प्रथम सत्र में आमंत्रित विशेषज्ञ डॉ जयप्रकाश कर्दम, भूतपूर्व निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली ने 'संघ की राजभाषा नीति' विषय पर मुख्यालय के उपस्थित अधिकारियों-कर्मचारियों और केंद्र के चारों क्षेत्रीय केंद्र से ऑनलाइन जुड़े कार्मिकों के साथ-साथ 20 जून से 10 जुलाई 2024 तक मुख्यालय परिसर में आयोजित 'एनईपी - 2020 के अनुरूप 486वें अनुस्थापन पाठ्यक्रम' (प्रशिक्षण कार्यशाला) के शिक्षक प्रतिभागियों के साथ रोचक और बहुउपयोगी चर्चा की। कार्यशाला के दूसरे सत्र में मुख्यालय के हिंदी अधिकारी श्री मनीष कुमार ने 'हिंदी में टिप्पण-प्रारूपण, हिंदी में मौलिक लेखन और अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद' पर व्यवहारिक कक्षा संचालित की।

दिनांक 27.06.2024 को सीसीआरटी की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक (अप्रैल-जून 2024) निदेशक श्री राजीव कुमार की अध्यक्षता में मुख्यालय के सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई। बैठक में मुख्यालय के उच्चाधिकारियों के अलावा ऑनलाइन मोड में चारों क्षेत्रीय केंद्र के परामर्शक/अधिकारीगण भी शामिल हुए। इस बैठक में सीसीआरटी मुख्यालय और इसके चारों क्षेत्रीय केंद्र में अप्रैल-जून 2024 तिमाही में राजभाषा के काम-काज में हुई प्रगति की समीक्षा और आगामी तिमाही (जुलाई-सितंबर 2024) की राजभाषा संबंधी कार्य-योजना पर चर्चा की गई।

सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली:	सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र:
डॉ. विनोद नारायण इंदूरकर, अध्यक्ष, सीसीआरटी **श्री राजीव कुमार (भा.रा.से.),** निदेशक, सीसीआरटी **डॉ. राहुल कुमार,** उप निदेशक (प्रशिक्षण) **डॉ. संदीप शर्मा,** उप निदेशक (मूल्यांकन) **श्री राजेश भटनागर,** उप निदेशक (वित्त) **श्री दिबाकर दास,** उप निदेशक (छात्रवृत्ति एवं अध्येतावृत्ति) एवं प्रभारी (उत्पादन अनुभाग) **श्री के.एस.एल. गणेश,** उप निदेशक (प्रशासन) **श्री श्रीभगवान वर्मा,** उप निदेशक (उत्पादन) **श्री आशुतोष,** उप निदेशक (सामान्य) **श्री मनीष कुमार,** हिन्दी अधिकारी	**श्री वाई. चन्द्र शेखर,** परामर्शक सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद, तेलंगाना **श्री ओम प्रकाश शर्मा,** परामर्शक सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर, राजस्थान **श्री निरंजन भुइयां,** परामर्शक सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी, असम **श्री के.एस.एल. गणेश,** उप निदेशक (प्रशासन) एवं प्रभारी सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, दमोह

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान)

15ए, सेक्टर-7, द्वारका, नई दिल्ली - 110075 भारत

दूरभाष : 011-25309300 ई-मेल : dir.ccrt@nic.in वेबसाइट : www.ccrtindia.gov.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
1-118/सीसीआरटी, सर्वे नं. 64
(गूगल ऑफिस के निकट),
मधापुर, हैदराबाद, तेलंगाना
पिन कोड:- 500 084
दूरभाष: +91+040+23111910/23117050
ई-मेल: rchyd.ccrt@nic.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
58, जुरीपार, पंजाबारी रोड
गुवाहाटी, असम
पिन कोड: 781037
दूरभाष: +91-0361-2335317
ई-मेल: rcgwt.ccrt@nic.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
हवाला खुर्द, बड़गाँव,
उदयपुर, राजस्थान
पिन कोड: 313011
दूरभाष: +91+0294-2430764
ई-मेल: rcud.ccrt@nic.in

क्षेत्रीय केन्द्र
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
पुरानी कलेक्ट्रेट बिल्डिंग,
दमोह, मध्य प्रदेश
पिन कोड:- 470661
ई-मेल: rcdamoh-ccrt@gov.in

@CCRTDelhi @ccrtofficialchannel ccrtnewdelhi @CCRTNewDelhi @ccrtofficial

संरक्षक: **डॉ. विनोद नारायण इंदूरकर**, अध्यक्ष, सीसीआरटी *मार्गदर्शक:* **श्री राजीव कुमार,** निदेशक, सीसीआरटी
संपादक: **मनीष कुमार**, हिंदी अधिकारी *प्रकाशन सहयोग:* **श्री रमनीक कुमार**, प्रकाशन सहायक एवं **श्री विरेन्द्र कटोच**, ग्राफ़िक डिज़ाइनर